इन्टरव्यू २९
स्थान नाटी इमली

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम मोहम्मद सकलैन है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 20 साल है।

प्र: आप अपने करघे पर बुन रहे है या मजदूरी पर ?
ज: नहीं मजदूरी करते हैं।

प्र: ये सारे करघे किसी और के हैं ?
ज: नहीं हमारे हैं सब तानी लेकर बना रहे हैं।

प्र: अच्छा साड़ी आप मजदूरी पर बना रहे हैं, करघा आपका अपना हैं ?
ज: हां।

प्र: तो ये सारे करघो पर ?
ज: हां।

प्र: कितने करघे है टोटल ?
ज: तीन करघा हमारा है और बाकी घर में चचा-बाबा हैं उनका है।

प्र: आपके पास तीन करघा है, उसपर कौन कौन बैठता है ?
ज: हां ये हे हमारा भाई।

प्र: तो आप जा तानी बाना लगाये तो सब गिरहस्ता से लिये है ?
ज: हां।

प्र: आप उससे खरीद में लाये हैं ?
ज: नहीं वो देता है।

प्र: अच्छा फिर आप इसे साड़ी बूना कर देंगे ?
ज: हां हम लेकर जाते हैं तो हमें मजदूरी देता है।

प्र: आप कितने साल से बुनाई कर रहे हैं ?

ज: नौ साल से।

प्र: तो आपके करघे शंरू से ही इतने है कि बढ़े है या घटे है ?
ज: नहीं पहले तो दो करघे थे अब एक करघा और बढ़ी है।

प्र: करघा आप लोग खरीदते लगाते हैं क्या ?
ज: हां खरीद कर लगाते है।

प्र: एक करघा लगाने में कितना लगता हैं ?
ज: करीब 5000 रुपया।

प्र: तो आप क्या करघा लगायें है तो इसका मतलब है कि आमदनी हो रही है बुनाई से ?
ज: हां हो रही है पर ये वखत बढ़िया कारोबार चल नहीं रहा है, मौसम भी ऐसा है, उसके बाद कम बिनाता है।

प्र: नहीं उकी तो आप इसी मौसम की बात कर रहे है लेकिन दो-तीन साल अभी जबसे आप काम कर रहे है, तब से कुछ बुनाई में कोई बदलाव आया है ?
ज: हां बदलाव आया है।

प्र: किस तरह का ?
ज: जैसे पहले 'केला' का बुनाता था, अब कतान बुनाता है तो उसमें कम मजदूरी मिलती थी, इसमें ज्यादा मिलती है।

प्र: मजदूरी उसमें ज्यादा मिलती है ?
ज: हां, केला में उसका बहुत कम उसकी आधी होती थी ।

प्र: तो आप जो नया करघा लगाये है तो इन्हीं साड़ियों के मुनाफे से लगाये होंगे ?
ज: नहीं, ये अलग काम है, इसमें फेंक कर बूटी बुनाता है, उसमें काढ़ के बुनाती थी मेहनत जादे है, इसमें खाली बठकी चलती है, इसमें मजदूरी कम है।

प्र: आप वाले की जादा है ?
ज: हां इसके जादे हैं

प्र: तो आपका कितना मुनाफा होता है, महीने में कितनी मजदूरी मिल जाती है ?
ज: महीने की मजदूरी पड़ती है 3000-4000 ऐसे ही।

प्र: आप अकेले निकाल लेते है चार हजार ?
ज: हां।

प्र: एक महीने में कितनी साड़ी बुन लेते हैं ?
ज: चार ठे।

प्र: और एक साड़ी का कितना मजदूरी मिलता है ?
ज: 1200

प्र: आपके घर में और मतलब जिन्हें आपको चलाना पड़ता है, ऐसे कितने लोग हैं ?
ज: 15 लोग।

प्र: तो सबका खर्चा इसी में निकल आता है ?
ज: नहीं परेशानी होती है, कभी चलता है परेशानी भी उसी में रहती है, चलता रहता है।

प्र: आप को किसी बुनकर समिति के बारे में पता है ?
ज: जी नहीं।

प्र: आपकी जानकारी में नहीं है कोई ?
ज: नहीं (इनके बगल में ही एक समिति का दफ्तर है)

प्र: आपके अब्बा से भी नहीं सुना कभी ?
ज: अब्बा जान को भी नहीं पता।